माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0	5	1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक – 321 –

333562

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	2	1	5	2	5	0	2	5

शब्दों में

दो | दो | [redacted]

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में X शब्दों में X

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 02

ग – परीक्षा की दिनांक 19 | 02 | 22

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेन्ड्री परीक्षा 2022 केन्द्र क्रमांक 15100

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
[illegible signature]	[illegible signature]

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
जी.पी. गौर(वरि. अध्यापक) प. क्र.-9680085 शा. उ. मा. वि. ...	एम.के. बुन्देला (उच्च.मा.शिक्षक) शा.नवीन उ.मा.वि. पहटकलाँ

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।''

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्ताकों की प्रविष्ठी करें

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्ताक (अंको में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करें और न ही छात्र उपयोग में लें। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखे उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें → केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें → परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमाँक - 1 का उत्तर

(i) → ब) जग - जीवन का

(ii) → स) तुलसीदास की

(iii) → ब) जब मन खाली न हो

(iv) → द) चाँद सिंह की

(v) → अ) आनन्द यादव

(vi) द) उपरोक्त सभी

प्र० क्रमाँक - 2 का उत्तर

(i) प्रत्याशा

(ii) लछमिन

(iii) मराठी

(iv) अधिक

(v) उत्साह

(vi) मात्रिक छंद

प्रश्न क्र.

3

(vii) आकाश

प्र० कमांक-3 का उत्तर

बात की चूड़ी मर जाना। - बात का ~~प्रवाह~~ प्रभावहीन हो जाना

(ii) अवधूत - शिरीष के फूल

(iii) सिल्वर वैडिंग - यशोधर बाबू

(iv) कहानी का केन्द्रीय बिंदु - कथानक

(v) चौपाई छंद - 16-16 मात्राएँ

(vi) तत्सम - संस्कृत के मूल शब्द

प्र० कमांक - 4 का उत्तर

(i) → उषा का जादू सूर्योदय होने पर टूटता है।

(ii) → पहलवान लुट्टन सिंह के 'दो' पुत्र थे।

(iii) → सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर 'मोहनजोदड़ो' था।

(iv) → रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट तक की होनी चाहिए।

P.T.O.

प्रश्न क्र.

(V) शब्दगुण तीन प्रकार के होते है।

(vi) दूसरा घर कर लेना अर्थात दूसरे को भी अपना समझना या सभी को एक समझना है।

(vii) " किसी वाक्य में क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दो को क्रियाविशेषण कहा जाता है "
जैसे → घोड़ा तेज दौड़ता है।

प्र० क्रमांक - 5 का उत्तर

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(V) असत्य

(vi) असत्य

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - 6 का उत्तर

उ० → चिड़िया अपने बच्चो को नीड़ (घोंसलें) में अकेला छोड़कर भोजन की तलाश में निकल चुकी है। उसके बच्चे नीड़ में अकेले है। भूख से व्याकुल एवं अपने माता-पिता के वात्सल्य से वंचित बच्चे अपने माता-पिता के घर वापस लौटने के आशा में नीड़ों से झाँक रहे है। वह अपने माता-पिता के घर वापस लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्र० क्रमांक - 7 का उत्तर

उ० → भोर के समय नभ (आकाश) का रंग पल-पल परिवर्तित हो रहा है। कवि ने ~~भोर~~ कविता 'उषा' में भोर के नभ की तुलना 'नीले शंख' से की है। भोर के समय आकाश ~~कर~~ का रंग शंख के समान नीला प्रतीत होता है जैसे-जैसे सूर्योदय का समय निकट आ रहा है आकाश का रंग भी पल-पल परिवर्तित हो रहा है।

प्र० क्रमांक - 8 का उत्तर

उ० → 'भक्तिन', महादेवी वर्मा जी की सेविका थी। वह गाँव से महादेवी जी के पास आयी थी। वह लेखिका के लिए खाना बनाना एवं अन्य सभी काम अपने देहाती तरीके से करती है। महादेवी जी को भक्तिन के ~~द~~ द्वारा बना हुआ ज्वार का दलिया, मक्के की रोटी, जौ के तिल लगाकर बनाए हुए पुए, बाजरे की रात को बनी हुई खिचड़ी सुबह मट्ठे के साथ अनचाहे मन से खाना पड़ता है। महादेवी जी

P. T. O.

MPBSE

ST-16A4

प्रश्न क्र.

यदि भक्तिन से कुछ कहती तो वह अपने शास्त्र-संगत तरीके से समझा देती थी। इस प्रकार भक्तिन के आ जाने पर उन्हें देहातो के समान रहन - सहन करना पड़ता था। इस प्रकार भक्तिन के आ जाने पर वह अधिक देहाती हो गई।

प्र० कमांक - 9 का उत्तर

उ० → अमावस्या की ठंडी, काली रात में, पूरा गाँव मलेरिया एवं हैजे से पीड़ित था। चारों ओर कुत्तों, पेचकों एवं सियारों के रुदन की ध्वनि सुनाई पड़ती थी। ऐसे में गाँव के लोग और भी अधिक काँपते थे। इस दौरान लुट्टन पहलवान शाम से लेकर सुबह तक लगातार अपनी ढोलक बजाता था। ढोलक की आवाज से पूरे गाँव को सांत्वना मिलती थी। पीड़ितों का दर्द, कम हो जाता था, मरने वालों को भय नहीं लगता था। इस प्रकार अकाल एवं महामारी की गंभीर परिस्थिति में ढोलक की आवाज पूरे गाँव में संजीवनी बूटी की तरह काम करती थी।

प्र० कमांक - 10 का उत्तर (अथवा)

उ० → यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है किन्तु यशोधर बाबू नहीं। इसके कई कारण थे -

(1) यशोधर बाबू जी की पत्नी मातृसुलभ प्रवृत्ति की थी। वे अपने बच्चों की बात मानती थी एवं उनके कहने पर अपने बालों में खिजाब लगाती, होठों पर लाली लगाती थी।

प्रश्न क्र.

(2) उनकी पत्नी एक ऐसे परिवार से आयी थी, जहाँ अपनापन अधिक एवं रीति-रिवाजों को एक सीमा तक ही माना जाता था। ऐसे में वे अपने बच्चों के कहे अनुसार चलने में नहीं झिझकती थी।

(3) यशोधर बाबू की पत्नी के ससुराल में सदैव जिठानियों का राज चलता था। ऐसे में उनकी कोई नहीं सुनता था एवं उन्हें पारिवारिक नियमों में बँधकर रहना पड़ता था। जब उन्हें उनके बच्चे बड़े हुए तो उन्हें सम्मान एवं आदर मिला। जिसके कारण वे बच्चों के अनुसार आधुनिकता को अपनाने में सक्षम हुई।

इसके विपरीत यशोधर बाबू एक परम्परावादी विचारधार के व्यक्ति थे। उनके आदर्श किशनदा थे जो स्वयं अविवाहित थे। ऐसे में उन्हें पारिवारिक नियमों की अधिक समझ न थी। जिससे वे परम्परावादी ही बने रहना ~~चाहते थे~~ चाहते थे। यही कारण है कि यशोधर बाबू समय के अनुसार स्वयं को ढालने में असमर्थ रहते हैं।

MPSE
www.oddyindia.com

प्र० क्रमांक- 11 का उत्तर

(अथवा)

उ०- समाचार लेखन की पद्धति उल्टा पिरामिड (▽) शैली पर आधारित होती है। समाचार लेखन में छः सवाल, क्या, कौन, कब, कहाँ, कैसे और क्यों का उत्तर देने की कोशिश की जाती है। इन्हें समाचार लेखन के छः ककार कहा जाता है। ~~इस~~

इनमें से प्रथम चार ककार क्या, कब, कौन और कहाँ के उत्तर समाचार लेखने के प्रारंभिक भाग इंट्रो (लीड) में दिए जाते हैं एवं अन्य दो ककार क्यों और कैसे

P.T.O.

के उत्तर समाचार लेखन के बॉडी (मध्य) भाग में दिए जाते हैं।

प्र० क्रमांक - 12 का उत्तर

30 → करुण रस → काव्य में जहाँ शोक नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से उद्दीप्त होता हुआ जब रस दशा को प्राप्त होता है तो वहाँ करुण रस विद्यमान होता है।

करुण रस का स्थायी भाव 'शोक' होता है।

उदाहरण → "अभी तो मुकुट बँधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खिले भी न थे, लाज के बोल,
खिले भी न थे, चुम्बन शून्य कपोल।
हाय! यहीं रूक गया संसार,
बना सिंदूर अंगार ॥"

स्पष्टीकरण → यहाँ विवाह के उपरान्त एक वधु के पति के मृत्यु की दशा के समय का वर्णन किए गया है अतः यहाँ करुण रस है।

MPBSE

www.oddyindia.com

प्रश्न क्र.

प्र0 क्रमांक -13 का उत्तर

अथवा)

किसी रचना में शब्द का अर्थ कराने वाली शक्ति को शब्द शक्ति कहा जाता है।

अभिधा शब्द शक्ति → वाक्य में जहाँ लोकसामान्य द्वारा सीधे रूप से किसी शब्द क अथवा वाक्य का अर्थ ग्रहण किया जाता है; वहाँ अभिधा शब्द शक्ति होती है। यहाँ पर शब्द का अर्थ ग्रहण करने हेतु लक्ष्यार्थ अथवा व्यंग्यार्थ ग्रहण नहीं किया जाता है।

उदाहरण - "शेर जंगल का राजा है"

प्र0 क्रमांक - 14 का उत्तर

	मुहावरा	लोकोक्ति
	मुहावरे अपने शाब्दिक अर्थ से भिन्न अर्थ है। इनका अर्थ विशिष्ट होता है।	- लोकोक्ति भी विशेष अर्थ देती है किन्तु इनका शाब्दिक अर्थ भी बना रहता है।
	मुहावरे ~~वाक्य में~~ स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं किए जा सकते है इनका प्रयोग वाक्य के मध्य में किया जाता है।	- लोकोक्ति स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त की जा सकती है।
③	मुहावरे साहित्यिक भाषा में प्रयोग किए जाते हैं	- लोकोक्ति स्थानीय भाषा में प्रयुक्त की जाती है।
④	उदाहरण - नौ-दो ग्यारह होना'	- उदाहरण - नाच न

P.T.

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

② घी के दिए जलाना। | जाने आँगन टेढ़ा।

प्र० क्रमांक - 15 का उत्तर

(i) → शुद्ध वाक्य - ईश्वर के अनेक नाम हैं।

(ii) → शुद्ध वाक्य - मुझे मात्र बीस रूपए दीजिए।

MPBSE

प्र० क्रमांक - 16 का उत्तर

- काव्यगत परिचय -

तुलसीदास

(i) दो रचनाएँ → तुलसीदास जी की दो रचनाएँ निम्न हैं
① रामचरितमानस (महाकाव्य)।
② विनय पत्रिका।

(ii) भाव पक्ष → महाकवि तुलसीदास जी भक्तिधारा की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। आप भगवान राम के अनन्य भक्त के रूप में जाने जाते हैं। आपकी रचनाओं में प्रमुख रूप से राम का गुणगान किया गया है। आपके काव्यों में लोकमंगल का यथार्थ देखने को मिलता है। आपने सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए मानव जीवन के कल्याण हेतु रचनाएँ लिखी हैं।

(iii) कला पक्ष → गोस्वामी तुलसीदास जी एक प्रमुख एवं निर्देशक कवि है। आपकी रचनाएँ सरल एवं स्वाभाविक एवं मानवाकूल है। आपने अपने काव्य में मुख्यतः अवधी और ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। रामचरितमानस जैसा महाकाव्य भी अवधी भाषा में लिखा गया है। इसके अतिरिक्त अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश इत्यादि का यथास्थान प्रयोग किया है। छंद एवं अन्य काव्यगुण स्वतः ही आपकी रचनाओं में विद्यमान है।

(iv) साहित्य में स्थान → कवि तुलसीदास जी 'गृहस्थ जीवन के चितेरे कवि' के रूप में विख्यात है। इसके अतिरिक्त आप रामभक्ति शाखा के अग्रणी कवि है। लोकहित साधना एवं मानवधर्म परिचायक के रूप में आपका काव्य साहित्य सदैव स्मृमरणीय रहेगा। आप कवियों के लिए सदैव एक प्रेरणास्त्रोत की भाँति याद किए जाएगे।

प्र० क्रमाँक - 17 का उत्तर

साहित्यिक परिचय

महादेवी वर्मा

(i) दो रचनाएँ → महादेवी वर्मा की रचनाएँ निम्न है -

① श्रृंखला की कड़िया।

② यामा।

P.T.O.

(ii) भाषा शैली → महादेवी वर्मा जी साहित्यिक रचनाओं में अग्रणी अग्रणी कवियत्री रही है। आपके आपने अपनी साहित्यिक कृतियों में साहित्यिक खड़ी बोली को अपनाया है एवं रचना के अनुरूप अन्य भाषा के शब्दो का प्रयोग भी किया है। कहीं-कहीं संस्कृत, उर्दू एवं अंग्रेजी के शब्दो का प्रयोग भी देखने को मिलता है। मुहावरे, लोकोक्ति, शब्द शक्ति का रचनाओं में भरपूर प्रयोग किया गया है।

(iii) साहित्य में स्थान → महादेवी वर्मा जी स्त्री-विमर्श की प्रमुख कवियत्री रही है। आपने स्त्रियों की समस्याओं के ऊपर अनेक रचनाएँ प्रस्तुत की है जिसमें से श्रृंखला की कड़ियाँ प्रमुख है। आपकी रचनाएँ रचनाओं का हिन्दी साहि साहित्य में अग्रणी स्थान है। आप छायावाद के स्तम्भों के रूप में अतिस्मरणीय है।

M P B S E
Laser, Inkjet & C
Copier Label ST-16 A4

प्र० क्रमांक - 19 का उत्तर

(अथवा)

(i) शीर्षक - गद्यांश का उचित शीर्षक निम्नवत है -
' शौर्य और देशप्रेम '

99.1mm x 33.9mm x 16

(ii) राष्ट्रीय भावना में "शौर्यभाव" का अपना विशिष्ट स्थान है।

(iii) सुदीर्घ शब्द का अर्थ 'लम्बे समय तक' रहने वाला' है

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमाँक - २० का उत्तर

(1) संकेत - आँगन में ठुनक ---------------- उतर आया है।

(2) संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "आरोह भाग-2" से लिया गया है। यह पद्यांश अध्याय "रुबाइयाँ" से अवतरित है इसके रचयिता "फिराख गोरखपुरी" जी है।

(3) प्रसंग → पद्यांश में कवि ने एक बालक की चाँद को माँगने की हठ को प्रस्तुत किया है।

(4) व्याख्या → कवि कहते है कि आँगन में एक माँ अपने चाँद जैसे सुंदर मुखड़े वाले बालक को लिए खड़ी है। बालक अपनी माँ से चाँद को माँगने की हठ करता है। माँ उसे समझाती है किन्तु वह नहीं मानता वह रोने लगता है और बार-बार अपनी माँ से चाँद को माँगने की जिद करता है। बच्चे की जिद से परेशान माँ अपने बालक को एक दर्पण लाकर देती और कहती है कि देखो चाँद दर्पण में उतर आया है। दर्पण में चाँद की परछाई देखकर बालक प्रसन्न होता है और अपने बच्चे को खुश देख माँ भी प्रसन्न होती है। इस प्रकार माँ ने अपने नन्हें बालक को दर्पण देकर प्रसन्न कर लिया है जिसे बालक असली चाँद समझता है।

(5) काव्य सौंदर्य → ① बालक और माँ के वात्सल्य का वर्णन किया गया है।
② वात्सल्य रस विद्यमान है।
③ बिम्ब योजना सार्थक है।
④ भाषा सरल, सहज है।
⑤ गेय पद शैली का प्रयोग किया गया है।

MPBSE

प्र0 क्रमाँक - 21 का उत्तर

(1) संकेत - रात्रि की विभीषिका ---------- संजीवनी शक्ति ही भरती थी।

(2) संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-' के अध्याय 'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है। इसके ~~मि~~ लेखक 'फणीश्वर नाथ रेणु' जी है 'पहलवान की ढोलक' इनकी एक बहुचर्चित कहानी है।

M P B S E

(3) प्रसंग → उपरोक्त गद्य में लेखक ने महामारी से पीड़ित गाँव मे ढोलक की आवाज के द्वारा संजीवनी भर देने की बात कही है।

(4) व्याख्या → इस गद्यांश में ~~कवि~~ लेखक कहते है कि अमावस्या की ठंडी और काली रात में समस्त गाँव महामारी से पीड़ित है। रात्रि में सभी का कष्ट और बढ़ जाता है। इतनी भयानक रात में सभी भय के कारण काँपते है। ऐसे में पहलान लुट्टन सिंह की ढोलक की आवाज से समस्त गाँव सचेत हो जाता है। ढोलक की आवाज सभी को ललकारती है। ~~ये~~ इसकी आवाज से पीड़ितो का दर्द कम हो जाता है, मरने वालों को मरने से भय नही लगता। लुट्टन सिंह शाम से लेकर सुबह तक ढोलक बजाता था जिससे लोगों को सांत्वना मिल सके। ढोलक की आवाज सुनकर लोगो में जीने की जीजिविषा जागती थी। वह अर्द्धमृत लोगो के लिए औषधि का कार्य करती थी। ~~जीजीवि~~ जीजिविषा विहीन लोगों में ढोलक की आवाज संजीवनी की भाँति कार्य करती है थी।

P. T. O.

प्रश्न क्र.

(5) विशेष - (1) गाँव में लोगो की महामारी के कारण हुई दुर्दशा का वर्णन किया गया है।
(2) वाक्य थोड़े लम्बे किन्तु यथार्थ है।
(3) शैली परिमार्जित है।
(4) भाषा सरल व बोधगम्य है।

~~प्र० क्रमांक - 18 - का उत्तर~~

~~तत्सम~~	~~तद्भव~~
~~संस्कृत भाषा में हिन्दी से~~ ~~हिन्दी में संस्कृत से आए~~ ~~बिना परिवर्तन हुए~~ ~~हिन्दी में संस्कृत से बिना परिवर्तित हुए आए शब्दो को तत्सम शब्द कहा~~ जाता है।	~~ये संस्कृत भाषा से परिवर्तित होकर हिन्दी में आए शब्द होते है।~~
~~विकृत होने के कारण इनमें~~	

M P B S E

M P B S E

~~प्र0 क्रमांक - 22 का उत्तर~~

~~आवेदन पत्र~~

~~सेवा में,~~
~~मुख्य नगर निगम अधिकारी,~~
~~नगर निगम ग्वालियर,~~
~~ग्वालियर (म॰प्र॰)~~

~~विषय → जल आपूर्ती करवाने हेतु आवेदन पत्र ।~~
~~महोदय,~~
~~विनम्र निवेदन है कि मैं आपका~~

प्र0 क्रमांक -18 का उत्तर

	तत्सम	तद्‌भव
①	संस्कृत भाषा से बिना परिवर्तित हुए हिन्दी में आए शब्दों को तत्सम शब्द कहलाते है।	– जो शब्द संस्कृत भाषा से परिवर्तित होकर हिन्दी में आते है, तद्‌भव शब्द कहलां
②	ये यथावर्त होते है। तत्सम शब्दो को ज्यों का त्यों हिन्दी में स्वीकारा गया है।	– हिन्दी में आने पर इनका रूप परिवर्तित हो गया है।
③	ये शब्द संस्कृतनिष्ठ होते है।	– इन पर हिन्दी का प्रभाव होता है।
④	उदाहरण – ① सर्प ② दुग्ध ③ रात्रि ④ अग्नि	परिवर्तित रूप – ① साँप ② दूध ③ रात ④ आग

प्रश्न क्र.

प्र0 क्रमाँक - २२ का उत्तर

आवेदन पत्र

सेवा में,

मुख्य नगर निगम अधिकारी,
नगर निगम, जबलपुर,
जबलपुर (म॰प्र॰)।

विषय → नियमित जल आपूर्ती करवाने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपका ध्यान वार्ड 10 की अनियमित जल आपूर्ती की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं वार्ड क्रमाँक 10 का निवासी हूँ। हमारे वार्ड में जल आपूर्ती की नियमित व्यवस्था नहीं है। यहाँ 3 दिन में एक बार जल द्वारा जल दिया जाता है और वो भी मात्र 1 घंटे के लिए। ऐसी परिस्थिति में हमें जल संकट से गुजरना पड़ता है एवं हमारे दैनिक कार्य भी नियमित नहीं हो पा रहे हैं। आप जानते हैं कि जल जीवन का आधार है और इतनी भीषण गर्मी में जल संकट का सामना करने में अत्यंत कठिनाई होती है।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप हमारे वार्ड में जल की आपूर्ती का नियमित प्रबंध करवाने का कष्ट करें।

सधन्यवाद
दिनांक - 19/02/२२

आपका भवदीय
सुनील कुमार

प्रश्न क्र.

प्र० क्रमांक - 23 का उत्तर

अनुच्छेद :

पर्यावरण प्रदूषण - उसकी रोकथाम में आपका योगदान

पर्यावरण प्रदूषण शब्द से आशय पर्यावरणीय कारकों ~~मे~~ जैसे - जल, वायु, मृदा आदि में होने वाले अवांछित ~~परिवर्तों~~ परिवर्तनों से है जिसमें मानव स्वास्थ्य पर हानिकारक एवं विपरीत प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। हम जिस वातावरण में रहते है यदि वह ही प्रदूषित होगा तो हम मानव स्वास्थ्य की कल्पना कैसे कर सकते है। हमारे आस - पास के वातावरण में अनेकों ऐसे कारक है जिनके कारण प्रदूषण दिन - प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। प्रदूषण के विभिन्न कारक मानव द्वारा ही फैलाए जाते है। मानव, पर्यावरण का सबसे बड़ा विद्रोही है। हम अपने स्वार्थ की पूर्ती हेतु अनेक साधनों एवं व्यवहार का प्रयोग करते है जिसमे पर्यावरण प्रदूषित होता है।

पर्यावरण प्रदूषण विभिन्न माध्यमों से होता है किन्तु उसका जनक मानव ही है। जल प्रदूषण एक महत्वपूर्ण समस्या है। हम जल में अपने घरों का प्रदूषित मल, गंदगी आदि निष्कासित करते है जिससे नदियाँ प्रदूषित होती है। कपड़ो को जलाशयों के तट पर धोना, पशुओं को नहलाना एवं अन्य कार्यों के परिणामस्वरूप जलाशय मलिन हो जाते है एवं ये जाकर नदियों में मिलते

M P B S E

प्रश्न क्र.

है। जिससे नदियां प्रदूषित ... कारखानों का निष्कासित जल भी इनमें मिलता है। जिससे हमारे लिए जल आपूर्ती के स्रोत लगातार कम हो रहे है।

वायु प्रदूषण फैलाने में भी मानव का योगदान है। कारखानों से निकले प्रदूषित धुँए के कारण वायु दूषित होती है। हमारे घरो में प्रयुक्त किए जाने वाले रेफ्रिजरेटर, ए.सी आदि से CFC गैस निष्कासित होती है जिससे लगातार वायु प्रदूषण बढ़ जाता है एवं हमारे लिए शुद्ध ऑक्सीजन की कमी आ रही है।

हम लगातार खेतो में फसलों की उच्च गुणवत्ता के कारण खाद एवं उर्वरक का प्रयोग करते है। रासायनिक उर्वरक मृदा को प्रदूषित करते है।

इन सभी का कारण केवल मनुष्य है। यदि हम खुद को अपने वातावरण के प्रति सतर्क करेंगे तो अपने पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते है।

हमारे घरो हमें अपने घरों से निष्कासित मल एवं अन्य गंदगी का यथोपचार नही करेंगे तो जल प्रदूषित होगा। इसलिए निष्कासित जल का उचित प्रबंध करना चाहिए एवं इसका उपचार कर ही इसे जलाशयो में भेजना चाहिए।

हमें खेतो में जैविक खादों का प्रयोग करना चाहिए। जिससे मृदा प्रदूषित न हो।

इस प्रकार हम अपने दैनिक व्यवहार में परिवर्तन लाकर अपने पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते है। हमें पर्यावरणीयानुकूल व्यवहार करना चाहिए। हम पर्यावरण को सुरक्षित रखकर अपने आप को भी सुरक्षित रख सकते है।

“ पर्यावरण का रखो ख्याल
बनाओ अपना जीवन खुशहाल ”

——— X ———